कुल पृष्ठ संख्या–24 (कवर पेज सहित) क्रम संख्या....

माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, राजस्थान, अजमेर

माध्यमिक परीक्षा

(परीक्षार्थी द्वारा स्वयं भरा जाना चाहिये)

Candidate's Roll No. In English

(In Figures)

(In Words) --

परीक्षार्थी का नामांक हिन्दी में

शब्दों में --

नोट :– परीक्षार्थी उपरोक्त के अतिरिक्त उत्तर पुस्तिका के अन्य किसी भी भाग में अपना नामांक नहीं लिखें।

माध्यम – हिन्दी ☐ अंग्रेजी ☑

विषय ....हिन्दी........

परीक्षा का दिन........शुक्रवार........

दिनांक ....16-3-19....

नोट :– परीक्षार्थी के लिए आवश्यक निर्देश इस पृष्ठ के पिछले भाग पर उल्लेखित हैं। जिन्हें सावधानी पूर्वक पढ़ लें व पालना अवश्य करें।

परीक्षक हेतु निर्देश :– (1) परीक्षक को उपरोक्त सारणी अनुसार प्राप्तांक भरना अनिवार्य है, अन्यथा नियमानुसार दंडित किया जायेगा।

(2) परीक्षक उत्तर पुस्तिका के अन्दर के पृष्ठों के बायीं ओर निर्धारित कॉलम में लाल इंक से अंक प्रदत्त करें।

(3) कुल योग भिन्न में प्राप्त होने पर उसे पूर्णांक में ही परिवर्तित कर अंकित करें (उदारणार्थ : 15 ¼ को 16, 17 ½ को 18, 19 ¾ को 20)

प्रश्नवार प्राप्तांकों की सारणी
(परीक्षक के उपयोग हेतु)

प्रश्नों की क्रम संख्या	प्राप्तांक	प्रश्नों की क्रम संख्या	प्राप्तांक
1		19	
2		20	
3		21	
4		22	
5		23	
6		24	
7		25	
8		26	
9		27	
10		28	
11		29	
12		30	
13		31	
14		योग	
15		प्राप्त अंकों का कुल योग (Round off)	
16		अंकों में	शब्दों में
17			
18			

परीक्षक के हस्ताक्षर .... संकेतांक

प्रमाणित किया जाता है कि इस उत्तर पुस्तिका के निर्माण में 58 जी.एस.एम. क्रीमवोव कागज ही उपयोग में लिया गया है।165/2019

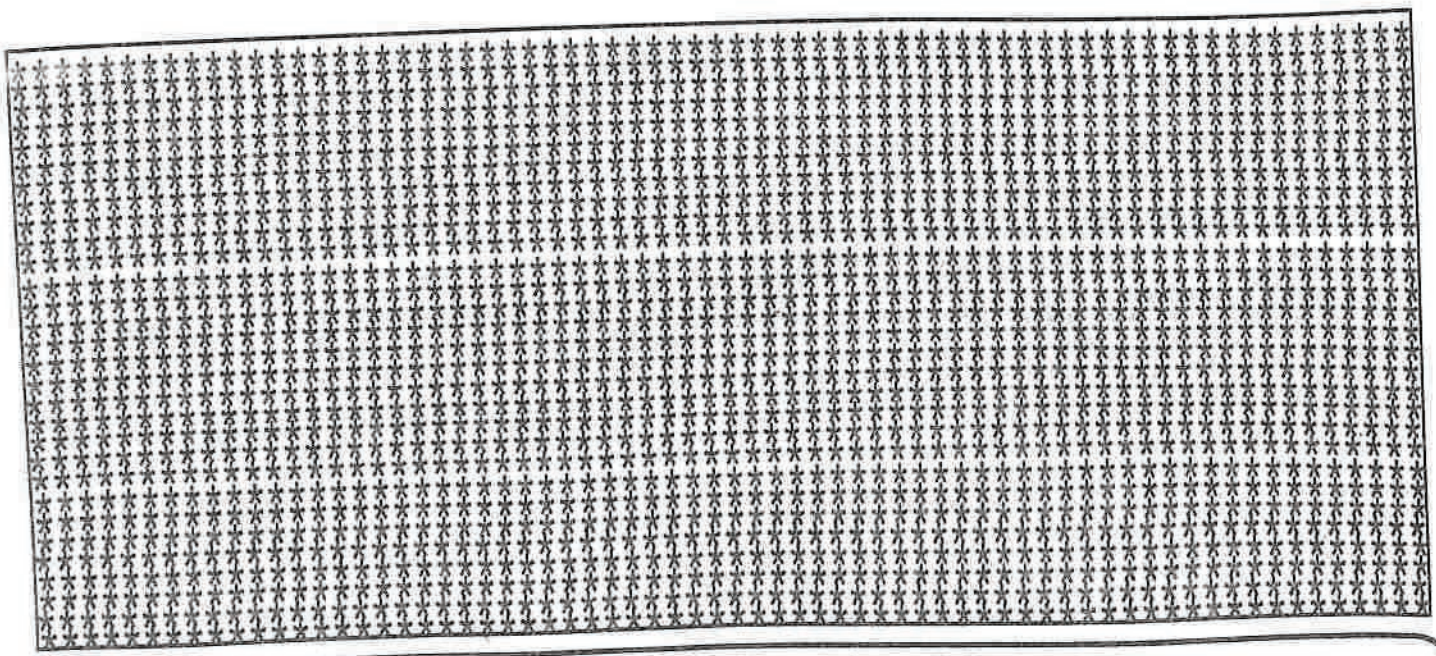

परीक्षार्थियों के लिए आवश्यक निर्देश

1. समस्त प्रश्नों का हल निर्धारित शब्द सीमा में इसी उत्तर पुस्तिका में करना है। विशेष परिस्थिति में अतिरिक्त उत्तर पुस्तिका पृथक से उत्तर पुस्तिका भरी हुई होने पर पर्यवेक्षक एवं वीक्षक की अनुशषां पर ही उपलब्ध कराई जायेगी।
2. प्रश्न–पत्र पर निर्धारित स्थान पर अपना नामांक लिखें।
3. प्रश्न–पत्र हल करने के पश्चात् जिस पृष्ठ पर हल समाप्त होता है, उस पर अन्त में "समाप्त" लिखकर अन्त के सभी रिक्त पृष्ठों को तिरछी लाईन से काटें।
4. निम्न बातों का विशेष ध्यान रखें अन्यथा अनुचित साधनों की रोकथाम अधिनियम के तहत कार्यवाही की जा सकेगी।
   (i) उत्तर पुस्तिका के ऊपर/अन्दर तथा प्रश्नोत्तर के किसी भी भाग में चाही गई सूचना के अलावा अपना नामांक, नाम, पता, फोन नम्बर अथवा पहचान की कोई अन्य प्रकार की सूचना आदि अंकित नहीं करें अन्यथा "अनुचित साधनों के प्रयोग" के अन्तर्गत कार्यवाही की जावेगी।
   (ii) उत्तर पुस्तिका के पृष्ठों को फाड़ें नहीं। उत्तर–पुस्तिका के मुख पृष्ठ पर अंकित संख्या के अनुसार पृष्ठ पूरे होने चाहिये। परीक्षार्थी उत्तरपुस्तिका प्राप्त करते ही पृष्ठ संख्या की जांच कर लें यदि पृष्ठ कम/अधिक या क्रम में नहीं हैं तो वीक्षक से तुरन्त बदलवा लें।
   (iii) परीक्षा केन्द्रों पर पुस्तक, लेख, कागज, केलक्यूलेटर, मोबाईल, पेजर आदि किसी भी प्रकार का इलेक्ट्रोनिक उपकरण तथा किसी भी प्रकार का हथियार आदि ले जाना निषेध हैं।
   (iv) वस्त्र, स्केल, ज्योमेट्री बॉक्स पर कुछ न लिखकर लावें। टेबुल के आस–पास कोई अवैध सामग्री नहीं होनी चाहिये, इसकी जांच कर लें।
   (v) अपनी उत्तर पुस्तिका/ग्राफ/मानचित्र आदि परीक्षा भवन से बाहर ले जाना दण्डनीय अपराध है, अतः परीक्षा समाप्ति पर उत्तर पुस्तिका वीक्षक को बिना सौंपे परीक्षा कक्ष नहीं छोड़ें।
5. उत्तरों को क्रमानुसार एक ही स्थान पर लिखें। प्रश्न क्रमांक भी सही अंकित करें, अन्यथा दण्ड स्वरूप परीक्षक को 1 अंक कम करने का अधिकार है। बीच में उत्तर पुस्तिका के पृष्ठ रिक्त न छोड़ें। गणित विषय के लिए रफ कार्य उत्तर पुस्तिका के अंतिम पृष्ठों पर करें तथा तिरछी रेखा से काटें।
6. जहाँ तक हो सके प्रश्न के सभी भाग के उत्तर, उत्तर पुस्तिका में एक ही स्थान पर अंकित करें।
7. भाषा विषयों को छोड़कर शेष सभी विषयों के प्रश्न–पत्र हिन्दी–अंग्रेजी दोनों भाषा में मुद्रित है। किसी भी प्रकार की त्रुटि/अन्तर/विरोधाभास होने पर हिन्दी भाषा के प्रश्न को ही सही माना जाये।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर
	1.	आधुनिक नारीयों की स्थिति
	2.	शिक्षा के प्रचार-प्रसार के कारण सब नारीयाँ आत्मविश्वास से भर गई थी। शिक्षा ने ही उनके जीवन में आत्मविश्वास का संचार किया।
	3.	अनेक नारीयो ने आजादी में अपने योगदान का निर्वहन किया इनमें भीकाजी कामा, सरोजिनी नायडू, अरूणा आशफ अली, कैप्टन लक्ष्मी सहगल आदि प्रमुख है। गांधी जी के आह्वान पर सभी वर्गों की नारी चाहे वे उच्च हो या निम्न घर-बार छोड़कर देश की आजादी के लिए संघर्ष करने निकल पड़ी। इन्होंने पुरुषो के साथ कंधे से कंधा मिला कर आजादी का संघर्ष किया।
	4.	कविता में ऐसे व्यक्ति को जगाने की बाता कही गई है जो बस जीवन में कल्पनाओं व सपनो में मग्न है उसे सच सत्य और जीवन मे आने वाली कठिनाइयो की खबर नही है।
	5.	आदमी को वक्त पर जगाया नहीं गया तो वह जो लक्ष्य पिछे छूट गये है उन्हे पाने के लिए घबरा कर भागेगा और धैर्यहीनता के कारण लक्ष्यों से वंचित रह जायेगा।
	6.	समय पर सजग नहीं रहने वाला व्यक्ति बाद में समय निकल जाने पर घबराता है वह घबरा कर बिना सोचे समझे अपने सपनो को पूरा करने हेतु तीव्र गति से चलता है उसकी यह गति घबरा कर भागने की गति होती है लेकिन क्षिप्र गति में व्यक्ति समय के साथ सजग रहकर धैर्यपूर्वक, लक्ष्य प्राप्ति की मन्द चाल में चलायमान होता है। वह किसी कार्य को करने के लिए सही क्षणों (समय) को चूनता है।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर

7. ग) यातायात सुरक्षा

प्रस्तावना – यातायात सुरक्षा की महत्ता –

विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी के कारण आज हमें इतने यातायात एवं परिवहन साधन प्राप्त हुए है जिनकी कल्पना भी नहीं की गई थी। इन यातायात साधनो फलस्वरूप हम तीव्र गति से लक्ष्य स्थान तक पहुंच सकते है और वो भी अबाध रूप से। दुर्गम दुर्लभ स्थानो तक पहुंचना हमारे लिए बायें हाथ का खेल हो गया है लेकिन जहां लाभ होता है वहां हानि भी अवश्य होती है।

यातायात साधनो के विकास एवं वृद्धि के कारण दुर्घटनाओ के स्तर में भी अभूतपूर्व वृद्धि हुई है। परिवहन साधनो जैसे – सड़क, रेलमार्ग, हवाई परिवहन आदि के विकास से यातायात साधनो की भीड़ हो गई है। अनेक कारणो जैसे –

(1) लापरवाही से वाहन चलाना
(2) नशे में वाहन चलना
(3) वाहनो को अत्यधिक तेज गति में रखना
(4) वाहन चलाते समय चालक का ध्यान भटक जाना
(5) सड़क दुर्घटना को कम करने के लिए सरकार द्वारा उचित कदम नहीं लेना।
(6) चालकों एवं नागरिको का अपने कर्तव्य पालन नहीं करना।

आदि के कारण सड़क दुर्घटनाओं में अप्रत्याशित वृद्धि देखने को मिलती है। इन्हे कम करने के सड़क सुरक्षा के अनेक नियमो एवं कानूनो का निर्माण एवं क्रियान्वयन

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर

किया जा रहा है।

ii) यातायात के सामान्य नियम -

नागरिकों की हितों की रक्षा हेतु सरकार द्वारा विभिन्न नियम-कायदों का निर्माण किया गया। इन्हें कड़ाई से लागु किये जाने का कार्य भी सरकार कर रही है।

यातायात के सामान्य नियमों को हम निम्न बिन्दुओं के माध्यम से समझ सकते हैं -

- यातायात चिह्नों का पालन करना।
- नशीले पदार्थों जैसे शराब, औषधियां आदि के सेवन के पश्चात वाहन चलाने से बचना क्योंकि ये भयंकर दुर्घटनाओं के कारण बन सकते हैं।
- गाड़ी चलाते समय, ओवरटेक करते समय चालक को उसके आसपास अन्य चालकों के हितों एवं अधिकारों की रक्षा करनी चाहिए।
- वाहन चलाते समय हेलमेट तथा सीटबेल्ट (वाहन के प्रकार के अनुसार) का प्रयोग करना
- वाहन चलाते समय चालकों के पास लाइसेंस होना अनिवार्य है।
- वाहन की गति धीमी, यातायात संकेतों के अनुसार तथा नियंत्रित रखना।
- वयस्क होने पर ही वाहन चलाना आदि।

ये नियम एक ओर नागरिकों के जीवन स्तर में सुधार करते हैं तो दूसरी ओर सड़क दुर्घटनाओं के कारण देश की अर्थव्यवस्था पर पड़ने वाले प्रतिकूल प्रभावों से दूरी बढ़ाते हैं। किसी भी देश चाहे वह विकसित हो या अविकसित सामान्य यातायात ~~नियमों~~ नियमों के कारण ही परिवहन का लाभकारी अनुभव प्राप्त करते हैं।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर

iii) सामान्य यातायात नियमो के पालन से लाभ –
वाहनो का प्रयोग करते समय हमें यह याद रखना चाहिये कि घर पर कोई हमारा इंतजार कर रहा है। थोड़ी सी भी असावधानी से हो सकता है भयंकर दुर्घटना हो जाये हमारे माँ-बाप को कितना असहनीय दुःख प्राप्य होगा यदि हम इस दुर्घटना में मौत की गोद में सिर रखकर सो जायें। हमारे बीवी, बच्चे, अभिभावक सबको इस असहनीय दुःख से गुजरना पड़ना इसका हमारे व हमारे अभिभावको के आर्थिक, सामाजिक, मानसिक स्तर पर गहरा दुष्प्रभाव पड़ेगा। अतः हमें सड़क सुरक्षा के नियमो की कड़ाई से पालन करना चाहिए।

"सावधानी हटी, दुर्घटना घटी"

यातायात नियमो से हम परिवहन साधनो का सही और अनुशासित तरीके से प्रयोग कर पाते है। इन नियमो का पालन कर हम अन्य लोगो में भी जागरूकता का संचार करते है। देश की अर्थव्यवस्था में अपना योगदान दे पाते है। अतः यातायात नियमो के अनेक लाभ है जो एक मनुष्य को सभ्य, अनुशासित, विवेकशील और जागरूक बनाते है। नैतिक शिक्षा का विकास करते है। उन्हे भयंकर दुर्घटनाओ से बचाते है।

iv) उपसंहार –
एक नागरिक होते हुए हमारा यह कर्तव्य है कि हम अन्य लोगो को सड़क सुरक्षा सबन्धित अपने कर्तव्यो को याद दिलाये। उन्हे यातायात संकेतो, नियमो आदि की जानकारी दें और स्वयं भी यदि वाहनो का प्रयोग करें तो सदैव अपने और अन्य

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

प्राणियो के हितो ध्यान में रखते हुए सही तरीके से वाहन का प्रयोग करें। सड़क सुरक्षा से सम्बन्धित सभी कर्तव्यो में नागरिक व सरकार दोनो की समान भूमिका होती है। क्योंकि—

" परहित सरिस धर्म नाहि कोई "

8. पत्र क्रमांक - त.ह./ 18-17/07 दिनांक - 16/03/2019

प्रेषक

तहसील दार

112, स्टेशन रोड,

भीण्डर

सेवा में

जिलाधीश महोदय

उदयपुर

विषय – जल संकट के कारण ~~अतिरिक्त बजट व~~ जल-अवस्था हेतु अतिरिक्त बजट की मांग।

मान्यवर

उपर्युक्त विषयान्तर्गत आपको सूचित किया जाता है कि इस साल वर्षा की अल्पता के कारण तहसील के अनेक गांवो को सूखे का सामना करना पड़ रहा है। जलस्रोतो के अत्यधिक दोहन के कारण नागरिको को पेयजल, सिंचाई सबंधि अनेक कठिनाइयो का सामना करना पड़ रहा है।

इस वर्ष का बजट ~~इस~~ इस जल संकट के उचित प्रबंध एवं अवस्था के लिए ~~~~ पर्याप्त नहीं है।

अतं आपसे अनुरोध है कि अतिरिक्त बजट भिजवाये ताकि समय पर उचित अवस्था कर लोगो की कठिनाइयो

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर

में कमी कर सके।

सादर

भवदीय
(हस्ताक्षर)
तहसील दार
भीण्डर

15. संदर्भ एवं प्रसंग-

यह पद्यांश हमारी पाठ्यपुस्तक में से सूरदास द्वारा रचित पदो में से लिया गया है मूलत: यह पद्यांश उनके द्वारा रचित ग्रन्थ सूरसागर से संकलित है।

यहां कवि सूरदास ने श्रीकृष्ण व राधा के मध्य हुए उस समय के सवांद का वर्णन हुआ है जब वे प्रथम बार मिले थे। इसमें कृष्ण अपनी चतुरता से राधा को अपने साथ खेलने के लिए राजी कर लेते है।

व्याख्या -

श्रीकृष्ण राधा से प्रश्न पूछते है कि हे गोरी! तुम कौन हो। कहाँ रहती हो और किसकी बेटी हो। तुम्हे मैंने ब्रज की गलियो में कभी नहीं देखा।

कृष्ण के प्रश्नो को सुनकर राधा कहती है कि उसे ब्रज में आने की कभी आवश्यकता ही नहीं पड़ी तो वह ब्रज की गलियों में क्यों आये। वह तो अपने द्वारा पर ही खेलती रहती है। लेकिन कानो से यह अवश्य सुनती रहती है कि ब्रज में नन्दलाल जी का पुत्र, ~~मा मक्ख~~ मक्खन व दही चोरी करता रहता है।

इस श्रीकृष्ण कहते है कि वे उसका क्या चुरा लेगें और वे राधा को संग मिलकर खेलने को कहते है और

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी द्वारा

राजी कर लेते है। इस प्रकार सूरदास कहते है उनके प्रभु श्रीकृष्ण रसिक सिरोमणि है उन्होंने भोली राधा को अपनी बातो के में बहकाकर खेलने के लिए राजी कर लिया।

विशेष- (1) साहित्यिक, सरस एवं प्रवाहपूर्ण ब्रज भाषा का प्रयोग हुआ है।

(2) शैली संवादपरक है।

(3) पात्रो की आयु के अनुसार उपयुक्त शब्दो का चयन कर संवादो को मनोरम बनाया है।

(4) श्रीकृष्ण को 'रसिक-शिरोमणी' बताया है।

16. संदर्भ एवं प्रसंग-

प्रस्तुत 'गद्यांश हमारी पाठ्यपुस्तक क्षितिज के 'अमर शहीद' एकांकी से लिया गया है जिसके लेखक लक्ष्मीनारायण रंगा है।

इस गद्यांश में जेलर करणी दान बाह्य सहानुभूति दिखाकर दृढ़ निश्चयी सागर मल को उसके लक्ष्य से वंचित करना चाहता है। उसका उद्देश्य है कि सागरमल स्वतन्त्रता के लिए किये गये अपने कार्यो के पश्चाताप के लिए महारावल से माफी मांग ले। लेकिन सागरमल अपने तर्को से उसे स्वतन्त्रता के प्रति अपनी दृढ़ दृढ़ता का परिचय देता है।

व्याख्या-

जेलर करणी दान के अनुसार स्वतन्त्रा प्राप्त होने से पहले ही उसे मार दिया जायेगा। यातनाओं से उसके शरीर को तड़पा-तड़पा कर नष्ट कर दिया जाएगा और उस स्वतन्त्रता का लाभ उसे प्राप्त नहीं होगा।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

जेलर के इस कथन पर सागर मल कहता है कि स्वतन्त्रता सेनानी उपवन के माली की तरह होता है माली आम आदि फलो का बाग लगाता है लेकिन वह जानता है कि इन फलो का लाभ एवं अमृत उसे नही मिलेगा। जब तक वे पेड़ बड़े ~~होगे~~ होगें तब तक वह ससांर से विदा हो जायेगा। लेकिन अपने परिश्रम से वह अपनी आने पीढीयो को ~~लाभ~~ इन फलो का लाभ देना चाहता है। उसी प्रकार स्वतन्त्रता सेनानी भी अपना बलिदान देकर दूसरो लोगो एवं अपनी मातृभूमि को परतन्त्रता की जंजीरो से मुक्त करवाता है। भागीरथ ने घोर तपस्या की ~~भाग~~ तत्पश्चात ~~व~~ वह गंगा को ला पाया था लेकिन खुद के नहीं लाया था। वह चाहता था की उस ~~भ~~ गंगा नदी के पवित्र जल से ~~युग~~ युगो-युगो तक लोग अपनी प्यास बुझाते रहेंगे।

विशेष:-

(i) भाषा सरल, सहज एवं प्रवाहपूर्ण है।

(ii) शैली ओजपूर्ण एवं तर्क प्रधान है।

(iii) सागरमल ~~की~~ ~~के~~ मातृभूमि को स्वतन्त्रता दिलाने के दृढ निश्चय का परिचय दिया गया है।

(iv) सागर मल ने अपने तर्क को सिद्ध करने के लिए माली तथा ~~भगीरत~~ भगीरथ का उदाहरण दिया है।

17. प्रभो कविता जयशंकर प्रसाद की एक प्रतिष्ठित कविता है। इसमें कवि ~~ह~~ ने ईश्वर के प्रति अपने दृढ विश्वास, आस्था, श्रद्धा को व्यक्त किया है।

कवि ने प्रकृति के प्रत्येक उपादान में ईश्वर की विशालता, शक्तिमता और गुणो को प्रतिबिम्बित किया।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

कवि कहता है कि निर्मल एवं स्वच्छ चन्द्रमा से बिखरती किरणों में ईश्वर का प्रकाशमान स्वरूप विद्यमान है। उसकी प्रशंसा का राग तरंग मालाओं के द्वारा गाया जाता है। वह अपनी अनन्त लीलाओं को प्रकृति एवं संसार रूपी क्रीडांगन में दिखा रहा है।

ईश्वर का दीपमालाओं से सुसज्जित भवन रात्रि में तारों से भरे आकाश में देखा जा सकता है। कवि के अनुसार ईश्वर हसंता तथा मुस्कराता भी है। उसकी मुस्कान को चाँदनी में देखा जा सकता। नदीयों की कल-कल की ध्वनि उसकी हंसने की ध्वनि है।

कवि कहता है कि ईश्वर इस प्रकृति रूपी पद्मिनि का एकमात्र सूर्य है जो समस्त प्राणियों एवं निर्जीवों को अपने प्रेममय प्रकाश से प्रसन्न करता है।

कवि ने इस ईश्वर की दया को सागर के समान बताया संसार का कोई भी प्राणी उसकी दया से वंचित नहीं रहता। कवि ने इसी कारण कहा है कि मछली उसे आशा दिला रही है कि ईश्वर की दया से उसके मनोरथ भी जरूर पूर्ण होंगे।

इस प्रकार कविता भाव प्रधान है। कवि ने इस कविता के माध्यम से संसार के प्राणियों को ईश्वर के प्रति अटूट श्रद्धा रखने, दृढ़ विश्वास एवं आस्था रखने का सन्देश दिया है। सदैव आशा के जीना चाहिए और प्रकृति के प्रत्येक कण-कण में ईश्वर के होने का आभास कराया है।

18. लोक संत पीपा का जन्म जीवन –

लोक संत पीपा का जन्म झालावाड़ के गागरोन में खींची राजवंश में हुआ। पिता की मृत्यु हो जाने पर

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर

युवावस्था में ही ये आगरोन के शासक बन गये। ये एक प्रजाप्रिय, कुशल प्रशासक शासक थे। और सगुण भक्ति करते थे। लेकिन स्वामी रामानन्द गुसांई के सम्पर्क में आने के बाद इन्होंने निर्गुण भक्ति को अपना लिया। इनका मन राजकाज से उचट गया तथा इन्होंने वैराग्य धारण कर लिया। वैराग्य धारण करने के बाद ये ईश्वर की निर्गुण भक्ति तथा समाज सुधार का कार्य करने लगे। इनके समाज सुधारों के फलस्वरूप समाज में अनेक परिवर्तन देखने को मिले हैं। इन्होंने समाज के उपेक्षित वर्ग में आत्मविश्वास, आत्मनिर्भरता, दृढ़निश्चय तथा साहस का संचार किया। अनेक व्यक्ति चाहे वह अमीर हो या गरीब, इनके उपदेशों एवं शिक्षाओं से प्रभावित हुए।

लोक संत पीपा की प्रमुख शिक्षाएं –

लोक संत पीपा ने निर्गुण भक्ति करने का सन्देश दिया इनके अनुसार ईश्वर मानव शरीर में है वह न मंदिर में, न मूर्ति में है और नहीं किसी वस्तु में। आत्मा और परमात्मा एक है। उनके ही शब्दों में कहा गया है –

वे ही पिण्डे, सो ही ब्रमाण्डे।

इनके अनुसार ईश्वर सभी को समान दृष्टि से देखता है। उसके लिए न तो कोई शूद्र है न ब्राह्मण। उसकी कृपा दृष्टि सब पर समान बनी रहती है अत: जाति, धर्म, पंथ आदि के माध्यम से व्यक्ति-व्यक्ति में भेद करना अनुचित है।

पीपा ने मांस नहीं खाने का सन्देश दिया

उन्होंने भक्ति को समाजसुधार का माध्यम बनाकर समाज के उपेक्षित वर्ग में नवजीवन का संचार किया।
पीपा कर्मनिष्ठा एवं समाज सुधार के कारण लोक गानो के विषय बने हुए है।

19. प्रस्तुत सोरठे में कवि कृपाराम खिड़िया ने वाणी का महत्व बताया है। वे कहते है कोयल अपनी मधुर वाणी से लोगो को प्रसन्न कर देती है। लेकिन कौआ कड़वा बोलता है तो सभी को बुरा लगता है यह सब वाणी के ही गुण है। मधुर वाणी सुनने वाले को प्रसन्न कर देती है तो कड़वी एवं कटु वाणी से सभी अप्रसन्न रहते है। अतः सदैव मधुर वाणी ही बोलनी चाहिए

20. मातृवन्दना कविता में कवि माँ को अपने जीवन में परिश्रम एवं चरित्र द्वारा अर्जित समस्त परिणामो को मातृभूमि को समर्पित करना चाहता है। वह जीवन में सभी बाधा- विघ्नो को झेलकर अपना पसीने से लतपत शरीर मातृभूमि को समर्पित कर उसे स्वतन्त्र करने हेतु दृढ संकल्पित है।

21. वर्तमान समाज में स्त्रीयो को पुरूषो की तुलना में हीन समझा जाता है। शादी के बंधन में बांध दिया जाता है। कन्यादान कविता में स्त्रीयो को आधुनिक समय के अनुसार अपने चरित्र एवं व्यक्तित्व की रक्षा एवं विकास की शिक्षा दी गई है। कवि ने सामाजिक

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर

मुख्य धारा से अलग लोगों को अपने लेखन का विषय बनाया है। ~~अब~~ कन्यादान कविता स्त्री-जीवन में आने कठिनाइयो का सामना साहस पूर्ण करने, स्वाभिमान के साथ जीने एवं व्यक्तित्व का विकास करने के लिए वर्तमान में प्रासंगिक है।

22. ~~लेख~~ लेखक ने सपने में एक सपना देखा जिसमें संसार में अपने नाम को अमर करने के लिए उसने देवालय बनाने का विचार किया लेकिन अंग्रेजी शिक्षा के बढते प्रभाव को देखते हुए उसने सोचा कि अंग्रेजी शिक्षा प्रदत्त लोग उसके द्वारा बनाये गये देवालय की तरफ मुह उठाकर भी नहीं देखेंगे। अतः उसने देवालय बनाने का विचार त्याग दिया।

23. ~~जयनारायण व्यास~~ ने भी भारत की प्रकृति के बारे मे कहा है जयशंकर प्रसाद " प्रकृति का रहा पालना यही "।
भारत प्राकृतिक सौन्दर्यता की दृष्टि से सम्पन्न एवं समृद्ध देश है। इसमें उत्तर ~~मे~~ में हिमालय, पूर्व में ~~हरियाली~~ हरियाली, पठार, पहाड़, मैदान, तट, रेगिस्थान आदि ~~का~~ सौन्दर्य पूर्ण ~~का~~ विविधता दिखाई देती है। कन्याकुमारी में लेखक पर्यटन के लिए गया उसी का सचित्र एवं सजीव वर्णन उसने ~~कु~~ आखिरि चट्टान पाठ में किया है। समुद्र ~~के~~ के विस्तार, सूर्योदय, सूर्यास्त आदि मनोरम दृश्यो का चित्रण किया है।

24. संत दादू ~~के~~ ने शिष्यो को सन्तोष पूर्वक जीवन जीने, निन्दा स्तुति को समान भाव से ग्रहण करने,

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर

ईश्वर में दृढ़ विश्वास एवं आस्था रखने, निष्काम भाव से कर्म करने, अहंकार का त्याग करने तथा किसी की निन्दा नहीं करने का सन्देश दिया है। उन्होंने अपने शिष्यों में सभी प्राणियों के प्रति दयाभाव, तथा प्रेमभाव रखने की शिक्षा भी दी है।

29. i) महाकवि निराला -

महाकवि निराला का जन्म 1896 ई में मेदिनीपुर जिले के महिषादल में हुआ। इनकी औपचारिक शिक्षा आस पास ही हुई। तत्पश्चात इन्होंने अन्य भाषाओं हिन्दी, संस्कृत, उर्दू आदि का ज्ञान प्राप्त करने हेतु स्वाध्याय किया। इनकी बाल्यावस्था में ही माता, फिर पिता, दिवंगत हो गये। तत्पश्चात विभिन्न कारणों से पत्नी, भाई, चाचा, भाभी एवं पुत्री का भी देहान्त हो गया। इनकी कृतियां - परिमल, अनामिका, नये पत्ते, राम की शक्ति पूजा, अर्चना, आराधना आदि प्रमुख है। 1961 में ये दिवंगत हो गये।

ii) देव -

रीतिकालीन कवि देव का जन्म ~~सवत~~ सवत 1730 में इटावा में हुआ। ये साहित्यिक ब्रज भाषा के कवि थे। इन्होंने कुल 52 रचनाएं की जिनमें प्रमुख है - भाव विलास, भवानी विलास, रसविलास, देव-विलास आदि।

इन्होंने आचार्य वर्म का निर्वाह किया। ये रसवादी कवि थे। सवत 1824 में इनका देहान्त हो गया

परीक्षक द्वारा प्राप्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर
	8.	i) एक रास्ता संकेत ii) साइकिल पर प्रतिबन्ध iii) हॉर्न पर प्रतिबन्ध iv) स्पीड चौड़ाई सीमा
	25.	~~कल्याण पूर~~ कल्याणपूर, सांभर, आमेर, भैराणा, नराणा दादू के पंचतीर्थ है।
	26.	रामानन्द गुसाई के सम्पर्क में आने से इन्होने निर्गुण भक्ति धारण करली तथा वैराग्य व भक्ति भाव में परिणित हो जाने से इन्हे राजकाज अहंकार के समान लगा अतः इनका मन राज काज से उचट गया
	27.	श्याम ने झूला झूलने के लिए राधा को आमंत्रित किया
	28.	भीषण गर्मी के कारण खेतो की मिट्टी पथराई थी
	9.	क्रिया - वे शब्द जिनसे कर्ता द्वारा किसी कार्य के होने या करने या कर्ता की स्थिति व दशा का बोध हो। कर्म के आधार पर क्रिया के दो भेद - (i) सकर्मक (ii) अकर्मक
	10.	कारक - करण कारक काल - सामान्य भूत वाच्य - कर्मवाच्य

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर
	11.	गजानन में बहुव्रीहि समास है।
		गजानन - गज जैसा है आनन जिसका (गणेश)
		बहुव्रिहि समास -
		(i) इसमें अन्य पद प्रधान होता
		(ii) किसी व्यक्ति विशेष की विशेषता बताई जाती है
	12.	क) अभी मुझे अभी जाना है।
		ख) मेरे पास पास केवल पचास रूपये है।
	13.	क) स्पष्ट रूप से नहीं बोल पाना
		ख) सीमा लाँघना
	14.	प्रशासक के अयोग्य होने पर प्रजा की भला नहीं होगी

समाप्त